भाषा | साहित्य | संस्कृति

प्रश्नकाल

ख्वाहिशें और मुक्ति,
दो दिगंत तक पसरी
दो छोरों की तरह—
पर, उम्र भर करता रहा
भीतर घाती समय
साजिशों पे साजिशें।
आबोहवाओं ने दी हवा
सारी ख़ुराफ़ातों को...
- रंजना शर्मा

वर्ष :02, अंक:16, जुलाई 2025

9 789334 350548

आवरण- बंशीलाल परमार

संपादक : आलोक रंजन

भाषा | साहित्य | संस्कृति

प्रश्नचिह्न

जुलाई 2025 । सोलहवां अंक

प्रबंध सम्पादकः
प्रवीन कुमार 'प्रणय'

प्रबंध सहयोगः
पीयूष पुष्पम

सम्पादक
आलोक रंजन

आवरणः बंशीलाल परमार
रेखांकनः श्वेता कुमारी

अक्षर संयोजन
खुशी

प्रश्नचिह्न में प्रकाशित रचनाओं का सर्वाधिकार रचनाकारों के अधीन सुरक्षित है। प्रश्नचिह्न में प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त विचार, तथ्य लेखकों के अपने हैं। प्रश्नचिह्न में प्रकाशित रचनाओं के लिए प्रश्नचिह्न पत्रिका समूह का सहमत होना आवश्यक नहीं है और न ही पत्रिका इसके लिए उत्तरदायी है।

वार्षिक मूल्य :

व्यक्तियों के लिए-	600.00 रुपये
संस्थाओं और पुस्तकालयों के लिए-	1500.00 रुपये
विदेशों में-	$25

एक प्रति का मूल्य :

व्यक्तियों के लिए-	50.00 रुपये
संस्थाओं के लिए-	100.00 रुपये
विदेशों में-	$10

विज्ञापन दरें :

बाहरी कवर-	20,000.00 रुपये
अन्दर कवर-	15,000.00 रुपये
अन्दर पूरा पृष्ठ-	10,000.00 रुपये
अन्दर का आधा पृष्ठ-	7,000.00 रुपये

संपादकीय कार्यालयः

8/54 - ए, प्रथम तल, डबल स्टोरी,
विजय नगर, दिल्ली - 110009
मोबाइल : 9155113056

ई-मेल: prashanchinha.patrika@gmail.com
infoprashanchinha.patrika@gmail.com

वेबसाईट: https://prashanchinhapatrika.blogspot.com

फेसबुक: https://www.facebook.com/prasnacihnapatrika

इंस्टाग्राम: https://www.instagram.com/prashanchinha.patrika

अनुक्रम

सम्पादकीय

कविताएँ

रंजना शर्मा, विजय शंकर पांडेय, तेजनारायण राय

नीलमणि, शुचि मिश्रा

लघु कथा

महिमा श्रीवास्तव

मोनिका तोमर

कहानियाँ

उमेश चरपे

किरण सिंह

समीक्षा

डॉ. इन्द्र बहादुर सिंह

डॉ. शुभा श्रीवास्तव

विविध

रिपोर्ट

समाचार

श्रमशीलता की छाया में उगता नवजागरण

आज के दौर में महिलाएं 18 घंटे काम कर रही है। उनके श्रम को पूरे दूनिया ने नकारा है। 21 वी सदी वाली दुनिया में महिलाओं के श्रम नगण्य रही है। श्रम की इस प्रक्रिया में महिलाओं का स्थान भविष्य दिखना संभव नहीं हैं। पूरे भारत में महिला कामगार की संख्या घर, मुहल्ले हर कस्बे, हर खेत, हर बस्ती और न जाने कहां कहां उनके श्रम कर रही है और करती रहेंगी। पूंजी के बदलते दौर में किया गया श्रम किया गया श्रम ही श्रम माना गया है महिलाओं द्वारा किया गया काम सेवाभाव है। जबकि 21 वी सदी का भारत में पूरी पूरी महिलाएं अपने श्रम के बल पर अपना जीवन चला रही है बेटी पैदा होने और पांच साल की उम्र के बाद उनके श्रम शुरू हो जाते है। इस श्रम को परिवार, समाज, राज्य, राष्ट्र ने कभी स्वीकारा ही नहीं।

यह आवरण चित्र किसी प्रसिद्ध चेहरे, मंचित दृश्य या कलात्मक प्रस्तुति का प्रतीक नहीं है। यह एक साधारण-सी लगने वाली स्त्री की पीठ है — पर यह पीठ ही तो वह स्तम्भ है, जिस पर हमारे समाज की असंख्य दीवारें टिकी हैं। यह तस्वीर प्रतीक है उस अदृश्य, अनकहे और अनगिनत स्त्रियों की जो हर सुबह अपने कंधों पर ज़िम्मेदारियों का गठरी बाँधकर निकल पड़ती हैं — कभी रोटी सेंकने, कभी ईंट उठाने, कभी कपड़े सिलने, तो कभी बच्चों को पढ़ाने। महिलाएं भारतीय कार्यबल का एक अभिन्न अंग बनाती हैं। रजिस्ट्रार जनरल ऑफ इंडिया द्वारा प्रदान की गई सूचना के अनुसार, महिलाओं की श्रम भागीदारी दर 2001 में 25.63 प्रतिशत थी। यह 1991 में 22.27 प्रतिशत और 1981 में 19.67 प्रतिशत की तुलना में वृद्धि है। जहां महिला श्रम भागीदारी दर में वृद्धि रही है, वहीं यह पुरुष श्रम भागीदारी दर की तुलना में लगातार उल्लेखनीय रूप से कम होती जा रही है। 2001 में, ग्रामीण क्षेत्रों में महिला श्रम भागीदारी दर 30.79 प्रतिशत थी वहीं शहरी क्षेत्रों में 11.88 प्रतिशत थी। ग्रामीण क्षेत्रों में, महिलाएं मुख्य रूप से कृषि कार्यों में शामिल होती हैं। शहरी क्षेत्रों में, लगभग 80 प्रतिशत महिला श्रमिक संगठित क्षेत्रों में काम करती हैं जैसे घरेलू उद्योग, छोटे व्यापार और सेवाएं, तथा भवन निर्माण।